“डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के साहित्य में भारतीय संस्कृति की छवियाँ”

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी
विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) चन्द्रभानु प्रसाद सिंह
प्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

अनुराधा प्रसाद
सहायक प्राचार्य
हिन्दी-विभाग
कुँवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय
पैट क्रमांक- E2209002

शोध का शीर्षक :–   ‘डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के साहित्य में भारतीय संस्कृति की छवियाँ’

प्रस्तावना :–

भारत एक वृहद देश है तथा सांस्कृतिक बहुलता भारत के अस्तित्व का आधार है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अनगिनत लोकगीत, संस्कार, संस्कृति और लोक गाथाएँ प्रचलित हैं। भारतीय संस्कृति का अर्थ है- सर्वांगीण विकास, सबका विकास। भारत में पारिवारिक मर्यादा और आदर्श परंपराएँ हैं। संयुक्त परिवार की परंपरा आज भी हमारे यहाँ जीवित है।

भारतीय संस्कृति अधिकार से ज्यादा कर्त्तव्य पालन पर बल देती है। हमारी संस्कृति अनेक धर्मों को और उसकी शिक्षाओं को न केवल अपने में संजोए हुए है बल्कि हमारे देश भारत की संस्कृति ने किसी भी धर्म को श्रेष्ठ या निम्न नहीं आंका। हमारी संस्कृति बहुआयामी पक्ष को स्वीकार करती है और दृष्टिकोणों, व्यवहारों, कथाओं और संस्थाओं की विविधता का स्वागत करती है। हमारी संस्कृति का आदर्श है- ‘अनेकता में एकता और एकता में अनेकता।’ भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व शिष्टाचार, विनम्रता, मान्यताएँ और मूल्य, सभ्य संवाद, धार्मिक-संस्कार वगैरह हैं। हम भारतीय आज भी अपनी परम्परा और आदर्शों को बनाए हुए है।

भारती की संस्कृति बहुल आयामी है। भूगोल के साथ संस्कृति भी परिवर्तित होती रहती है। बहुभाषिकता और बहु-सांस्कृतिकता भारतवर्ष की विशेषता है। भारतीय संस्कृति एकरैखिक नहीं है। विविध धर्मों, भाषाओं का इन्द्रधनुषी वैविध्य भारतीय संस्कृति का सौन्दर्य है। रामेश्वर द्विवेदी जी ने अपनी रचनाओं में इस बहु भाषिकता और बहु सांस्कृतिकता को चित्रित किया है।

कवि, कथाकार, आलोचक और यायावर रामेश्वर द्विवेदी का समकालीन साहित्य में विशिष्ट स्थान है। रमेश्वर द्विवेदी जी के सम्पूर्ण साहित्य में व्यक्ति, समाज एवं संस्कृति की टकराहट महत्वपूर्ण रही है। रामेश्वर द्विवेदी जी की सांस्कृतिक छवियों का महत्वपूर्ण पक्ष धार्मिक, सामाजिक व

पारिवारिक संदर्भों में नजर आता हैं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर कराटी चोट भी की है। अनुभव की प्रामाणिकता और लोक संस्कृति की गहरी पहचान की दृष्टि से रामेश्वर द्विवेदी हिन्दी के अग्रणी रचनाकारों की पंक्ति में विराजते हैं। केन्द्रीय विद्यालय के सेवा-काल में स्थानांतरित होते देश भर की लोक-संस्कृतियों का साक्षात्कार जिस हार्दिकता से रामेश्वर द्विवेदी जी ने किया, उसका प्रतिबिम्ब इनकी रचनाओं में दूध में मिश्री-सा घुला है। जन्मभूमि बज्जिकांचल(बिहार) तो उनमें रचा-बसा है ही।

डॉ० रामेश्वर द्विवेदी का कहानी संग्रह- ''आइने के पेड़ क्यों नहीं होते' की कहानियाँ उसके पात्र, परिवेश और संवाद कभी उत्तर-पूर्व प्रदेश, कभी बिहार, कभी बंगाल तो कभी पंजाब की संस्कृतिक झलक देते हैं। इन सभी राज्यों में केन्द्रीय विद्यालय में सेवा समर्पित करते लेखक ने यहाँ की लोक संस्कृति को पूरी तल्लीनता के साथ समझा और जिया है। इन कहानियों के हर पात्र का अपना नैतिक भूगोल है जो अपनी और अपने प्रदेश की संस्कृतिक पहचान की विश्वसनीयता को पूरी ईमानदारी से प्रकट करता है इस संग्रह की और लंबी कहानियों 'हिरना समझ बूझि वन चरना' और 'गुलमोहर फिर खिलेगा' क्रमश: मेघालय और केरल के सांस्कृतिक सच का आईना है। 'हिरना समझ बूझि वन चरना' की नायिका मेघालय की खासी जनजाति की है। मातृसत्तात्मक परिवेश होने के कारण यहाँ उसका केरेलियन पति राजन पिल्लै शोषित है। लेखक कहते है- ''यदि लोहिया यहाँ रहते तो यहाँ के पुरूषों के लिए आरक्षण की माँग जरूर की होती।'' यह लम्बी कहानी एक बड़ी परिधि छेककर खड़ी होती है, जिन्हें भाषा की मंथर गति देकर उपन्यास बनाया जा सकता है। पूर्वोत्तर के अलावा संग्रह की कहानियों में हरियाणा, दिल्ली, बिहार तथा पंजाब आदि के समाज को समेट लिया है। 'कंठ फटी बाँसुरी' की कहानियों में भी भारतीय संस्कृति की विविध छवियाँ दिखाई पड़ती है।

'एक ही' शीर्षक कहानी में नायक सागर, उसकी पत्नी और माँ बिहार की सांस्कृतिक पहचान के साथ तत्कालीन कुटिल, निर्भय भांड कि जोकर? हुए राजनीतिक परिदृश्य की पहचान कराती है। नायक की माँ बिहार की संस्कृति और नायक अपसंस्कृति का परिचय देता है। नायक का किशोर

मस्तिष्क बंगाल और मेघालय की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में रच-बसकर पकने की प्रक्रिया में है, उस पर भूमंडलीकरण का असर है, वह कार-पे-दीअम के नशे की गिरफ्त में उत्तर आधुनिकता की आहट है। यह कहानी बदलती उम्र के एक ही चरित्र सागर में प्लेटोनिक लव की वायवीयता में उड़ता और काम (सेक्स) की मांसलता को गले-गले तक डूब कर जीता हुआ दो विपरीत जीवन स्थितियों एवं विलग जीवन दर्शन के माध्यम से दो परस्पर विरोधी संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करता है।

'सुनते हुए चोटियों का उजला गीत' यात्रा-वृतान्त है। डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के यात्रा-वृतान्त सहज रूप में पठनीय तो है ही, ज्ञानवर्द्धक भी कम नहीं है। इसमें हिमाचल के प्रमुख स्थलों के साथ केरल एवं मेघालय की यात्रा के भी रोचक विवरण है। उन क्षेत्रों की प्राकृतिक सुषमा के साथ लोक-संस्कृति और जनजीवन के चित्रण में रामेश्वर द्विवेदी जी ने गहरी क्षमता का परिचय दिया है। यात्राएँ विवशता में की गई यात्राएं नहीं है, यात्राओं के लिए ही यात्राएं की गई है। 'सुनते हुए चोटियों का उजला गीत' में कुल 20 यात्रा वृतांत है। इनमें अधिकांश हिमाचल प्रदेश से संबंधित है, बीच-बीच में पूर्वोत्तर भारत और केरल से। ये यात्रा-वृतांत महज यात्राओं के विवरण नहीं है। इनमें इतिहास भी है, दर्शन भी, भूगोल और राजनीति भी। शिमला के खड़ा पहाड़ की यात्रा के क्रम में गुर्जरों का इतिहास बताते हैं। कुल्लू की यात्रा करते हुए नागों के इतिहास से परिचित कराते है। ऐसे ऐतिहासिक पौराणिक संदर्भ हमें बौद्धिक रूप से समृद्ध करते है। महाभारत कथा के संदर्भ हिमाचल की लोक कथाओं में है जिनसे लेखक परिचित कराता है। इन यात्राओं में अतीत का गौरव ही नहीं वर्तमान का दंश भी है।

कलाप्रेमी रामेश्वर द्विवेदी जी का मन शोभा सिंह के कला ग्राम अंद्रेटा में खूब रमा है। वे सुकवि हैं, सो गद्य काव्य गंधी है। प्रसंगात जगदीश गुप्त, माहेश्वरी तिवारी, अनामिका, संजय पंकज को कोट करते चलते हैं। मीर और गालिब तो कदम-कदम पर है। भाषा चित्रात्मक है- ''चुआडा में एक मरियल-सी नदी सिसकती-सी बह रही है। पहाड़ इतना खड़ा है जैसे– साहुल गिराकर दीवार चिनी गई है।' देवभूमि हिमाचल में लेखक का मान खूब रहा है क्योंकि न कोई भागम भग, न कशमकश, न जद्दोजहद, न स्पर्द्धा।

न आकाशीय चैनलों से बरसती नई-नई चीजों के प्रति उपभोक्तावादी ललक। जीवन को सादा, विचारों को पवित्र रखने वाले, इन गाँवों के बुर्जग सचमुच देव सभ्यता के सच्चे उत्तराधिकारी लगते हैं। हिमाचल के जीवन में बजते आदिम राग में लेखक डूब-सा गया है। ठीक ही कहा गया कि हिमाचल ने तरक्की तो खूब की है, मगर अब तक अपने तरीके नहीं बदले हैं। छुआछूत एवं विकसित इलाकों की असुविधाएं जरूर खटकती हैं। क्या खूब कहा गया है–

"सैर कर दुनिया की गालिव,
जिंदगानी फिर कहाँ।
जिंदगानी गर मिली तो नौजवानी फिर कहाँ।"

डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के कविता संग्रह- 'मिठास ईश्वर की तरह अजनबी' में देहात और महानगर दोनों के बीच के सजल सिलसिलों की कविताएँ है। ये कविताएं युवा मानस की सांस्कृतिक चेतना की एक अचूक आवाज है। कविताओं की भाषा बज्जिकांचल की सोंधी गंध से सरोबोर है। आज के समय और समाज के कटु यथार्थ का चित्रण तो सभी करते है पर रामेश्वर द्विवेदी जी का अंदाजे बंया कुछ और है-

"बसंत के बेटों ने
पतझड़ की बहुओं को पटाया है
छींट की साड़ी के सहारे
उस दुकानदार की तरह जिस की गांठ से
कटे-फटे कपड़े निकलते ही हैं
जवान भिखारिनों के लिए।"

रामेश्वर द्विवेदी जी प्रश्नाकुल कवि हैं। यह प्रश्नाकुलता भयावह यथार्थ से रूबरू कराती है-

“पेट की भूख से भागती

देह की भूख के हवाले

अपनी आदिम गरीबी लिए

हमारी सभ्यता पर

कितना बड़ा सवालिया मीनार

होती हैं औरतें?”

स्टेनों अपनी विधवा माँ, तपेदिक पीड़ित भाई और कुँवारी बहन की कोख की सलामती के लिए बार-बार पेट गिराती है। खूबसूरत खतरे चैनलों से उतरकर हर घर आँगन में पसर रहे हैं। कवि दुखी है कि शील और सिद्धान्त रद्दी की तरह जला दिए गए हैं। हम संबंधों के रेगिस्तान में आ गए है।

रामेश्वर द्विवेदी जी पारिवारिक संवेदना के कवि हैं। पिताजी माँ और बहन पर लाजवाब कविताएं लिखी हैं। गाँव खूब याद आया है। इस प्रसंग में सर्वेश्वर जी की कविता ‘कच्ची सड़क’ से सादृश्य देखा जा सकता है। अपनी मिट्टी से गहरे जुड़ाव के कारण बज्जिका के शब्दों की खूब आभद हुई है। धारना, रउद, रिरियाता, मसुआए, पथार हकबकाना, बहिबात, लगा जैसे शब्दों का सार्थक और सर्जनात्मक प्रयोग हुआ है पर कवि आंचलिकता में आबद्ध नहीं है। केन्द्रीय विद्यालय की सेवा ने आत्म विस्तार दिया है–

“कवि! असम उतना ही खूबसूरत है

उतने ही सुन्दर हैं पहाड़ी शामें

ब्रह्मपुत्र उतना ही विशाल

पहाड़ उतने ही ऊँचे-

फूल उतने ही रंगीन-सब तुम्हें बुलाते हैं।”

कवि कश्मीर के कहर, पंजाब की पीड़ा और असम के आतंक को महसूसता है। रामेश्वर जी आस्था के कवि हैं। कविता, शिक्षण और जीवन-तीनों के प्रति आस्था है-

"कविता है कि

सब कुरूपता के ऊपर

बाकी है धरती को सुन्दर

और सुन्दर बनाने का सपना"

'आलोचना की अन्तरंगता' डॉ० रामेश्वर द्विवेदी की आलोचना की पुस्तक है। रामेश्वर द्विवेदी का यह आलोचना कर्म वैयक्तिकता से निवैयाक्तिकता की यात्रा है। इस लिहाज से चेतना शक्ति प्रस्फुटन रचना है तो आलोचना एक पुनर्रचना। रामेश्वर द्विवेदी जी की सांस्कृतिक-दृष्टि की छाप आलोचना दृष्टि में दिखाई पड़ती है।

2. शोध विषय का महत्व :–

डॉ० रामेश्वर द्विवेदी की रचनाएँ मूल्यों, विश्वासों, व्यवहारों, भाषा, रीति-रिवाजों को संदर्भित करती है। इनमें जातीयता, आयु, राष्ट्रीयता, लिंग, पारिवारिक संरचना, यौन-अभिविन्यास और आध्यात्मिका जैसे तत्व शामिल है। रामेश्वर द्विवेदी जी की रचनाएँ सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहिका है। इन्हीं तथ्यों में प्रस्तावित शोध-विषय की महत्ता परिलक्षित होती है।

3. प्रस्तावित विषय पर शोध की आवश्यकता :–

रामेश्वर द्विवेदी की रचनाएँ सहज रूप में पठनीय तो है ही, ज्ञानवर्द्धक भी कम नहीं है। रामेश्वर द्विवेदी जी भारत की बहुलतावादी संस्कृति के चितेरा हैं। रामेश्वर द्विवेदी जी के साहित्य में हमें बहुरंगी संस्कृतियों की छवियाँ देखने को मिलती हैं उनमें से हिमाचल, पूर्वोत्तर एवं बज्जिकांचल की सांस्कृतिक छवियों की बहुलता प्रमुखत: द्रष्टव्य है। भारत का प्राण उसका सांस्कृतिक वैविध्य है जबकि इन दिनों एकरैखिक संस्कृति की बात हो रही है। इस संदर्भ में भारत के इन्द्रधनुषी वैविध्य को उद्घाटित किया ही जाना चाहिए।

4. पूर्वकृत शोध-कार्य :–

इन्टरनेट एवं हिन्दी विभाग में उपलब्ध शोध-संदर्भ के विभिन्न खण्डों के अवलोकन से ऐसा स्पष्ट होता है कि प्रस्तावित शोध-विषय 'डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के साहित्य में भारतीय संस्कृति की छवियाँ' पर कोई शोध-कार्य पूर्व में संपन्न नहीं हुआ है।

5. शोध-कार्य के स्त्रोत :–

डॉ० रामेश्वर द्विवेदी की रचनाएँ–

- आइने के पेड़ नहीं होते (कहानी संग्रह)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, आधार प्रकाशन प्रा० लि० पंचकूला हरियाणा, प्रथम संस्करण- 2011
- कोहरे में बासुरी (डायरी)– डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, संपादक-हिमांशु, जोशी, किताब घर- नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006
- गुलमोहर फिर खिलेगा– संपादक– कमलेश्वर, किताब घर, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2003
- मैं शहर और सड़क (उपन्यासिका)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, पूर्वांचल प्रहरी, हिन्दी दैनिक गुवाहटी में सन् 1995 जून से दिसम्बर, 1995 तक धारावाहिक प्रकाशित
- सुनते हुए चोटियों का उजला गीत (यात्रा-वृतांत)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार, प्रथम संस्करण- 2017
- मिठास ईश्वर की तरह अजनबी (कविता संग्रह)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार, प्रथम संस्करण- 2006

- आलोचना की अन्तरंगता (आलोचना)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर (बिहार), प्रथम संस्करण- 2022
- कंठ फटी बॉसुरी (कहानी संग्रह)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर (बिहार), प्रथम संस्करण- 2014

6. शोध-प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध-कार्य में शोध की आलोचनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। संबंधित विषय हेतु उपयुक्त और सम्भावित वृहत् स्रोतों के गहन अध्ययन के क्रम में शोधार्थी द्वारा परीक्षण, विश्लेषण, मूल्यांकन और शोध-निष्कर्षों की स्थापना के लिए शोध की दोनों मान्य प्रविधियाँ आगमन और निगमन का प्रयोग किया जाएगा। आगमन प्रविधि द्वारा वृहत्तर तथ्यों का संकलन, अनुशीलन और परिशीलन किया जाएगा तथा निगमन प्रविधि द्वारा मंथन के पश्चात शोध-निष्कर्षों की स्थापना की जाएगी। प्रस्तावित विषय पर रामेश्वर द्विवेदी जी से संवाद किया जाएगा।

7. प्रस्तावित शोध-कार्य का अध्यायीकरण :–

- प्रथम अध्याय : शब्द साधक डॉ० रामेश्वर द्विवेदी : जीवन एवं साहित्य
- द्वितीय अध्याय : भारतीय संस्कृति: एक सिंहावलोकन
- तृतीय अध्याय : डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के साहित्य में मातृभूमि बज्जिकांचल
- चतुर्थ अध्याय : डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के साहित्य में देवभूमि हिमांचल
- पंचम अध्याय : डॉ० रामेश्वर द्विवेदी के साहित्य में पूर्वोत्तर एवं दक्षिण भारत
- छठा अध्याय : डॉ० रामेश्वर द्विवेदी की सांस्कृतिक दृष्टि: एक समाकलन

8. शोध-संबंधी पूर्व कल्पना :–

द्विवेदी के साहित्य में सांस्कृतिक छवियों का अभिनव रूप द्रष्टव्य है। भारतीय संस्कृति को जनोन्मुख बनाने में रामेश्वर द्विवेदी जी का साहित्य प्रेरक है। रामेश्वर द्विवेदी जी की रचनाओं में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का स्वरूप अलग छवि प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही रामेश्वर द्विवेदी जी का साहित्य समाज कल्याण के प्रति एक सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण को रेखांकित करता है। भारत का वैशिष्ट्य उसका सांस्कृतिक वैविध्य है। साथ ही संस्कृति धर्म से प्राण वायु ग्रहण करती है। साथ ही इन दोनों के मूल में मानव कल्याण है। रामेश्वर द्विवेदी जी की रचनाओं में इसका बखूबी दिग्दर्शन होता है।

9. संदर्भ-ग्रंथ सूची :–

- आइने के पेड़ क्यों नहीं होते (कहानी संग्रह)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, आधार प्रकाशन प्रा० लि०, पंचकूला हरियाणा प्रथम संस्करण- 2011
- कोहरे में बॉसुरी (डॉयरी)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, संपादक-हिमांशु जोशी, किताब घर, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006
- गुलमोहर फिर खिलेगा (कहानी) संपादक-कमलेश्वर, किमाब घर, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2003
- मैं शहर और सड़क (उपन्यासिका)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, पूर्वांचल प्रहरी, हिन्दी दैनिक, गुवाहटी में सन् 1995 जून से दिसम्बर, 1995 तक धारावाहिक प्रकाशित।
- सुनते हुए चोटियों का उजला गीत (यात्रा-वृतांत)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर (बिहार), प्रथम संस्करण- 2017

- मिठास ईश्वर की तरह अजनबी (कविता संग्रह)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर (बिहार), प्रथम संस्करण- 2006
- आलोचना की अन्तरंगता (आलोचना)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर (बिहार) प्रथम संस्करण- 2022
- कंठ फटी बॉसुरी (कहानी संग्रह)- डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर (बिहार), प्रथम संस्करण- 2014

सहायक-संदर्भ सूची :–

- संस्कृति के चार अध्याय– डॉ० रामेश्वर द्विवेदी, प्रकाशन उदयाचल, आर्य कुमार रोड, पटना- 4, प्रथम संस्करण- सन् 1956
- हिमाचल की सांस्कृतिक विरासत– किशोरी लाल वैध- सन् 1971
- हिमाचल परिचय– राहुल सांकृत्यायन, मुद्रक और प्रकाशक, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद
- भारतीय संस्कृति की रूपरेखा– बाबू गुलाबराय, रवीन्द्र प्रकाशन, पाटनकर बाजार, ग्वालियर, संस्करण- सन् 1974-75
- भारतीय संस्कृति– डॉ० देवराज, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण– सन् 1960

अन्य स्रोत :

- पुस्तकालय

- पत्रिकाएँ
- समाचार–पत्र
- विविपीडिया
- ई–पत्रिकाएँ
- शब्द–कोश
- वेबसाइटस
- विद्वतापूर्ण लेख इत्यादि।

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) चन्द्रभानु प्रसाद सिंह
प्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

अनुराधा प्रसाद
सहायक प्राचार्य
हिन्दी-विभाग
कुँवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय
पैट क्रमांक- E2209002